श्री जैन साहित्य अकादमी ट्रस्ट,मुंबई

जैन तीर्थो की भव्य गाथाए व्याखान श्रेणी

व्याख्यान-१६

आंध्र-कर्नाटक के प्राचीन जैन तीर्थ: इतिहास के परिप्रेक्ष्य में

व्याख्याता- श्री वृषभभाई भंडारी

दिनांक: ०१/०४/२०२३

जैन बृहद कल्प भाष्य इस ग्रंथ में एक बताई है जो बहुत इंपॉर्टेंट है समझने की लिए ऐतिहासिक दृष्टि से| उसमें ऐसा आता है कि यह कृति पांचवी छटी शताब्दी की है| यह लिखी गई थी वाचक संघ दास जी गणि द्वारा| यह आगमो का छेद सूत्र है| अगम के के अंतर्गत छद सूत्र आते हैं| उसके अंतर्गत यह ग्रंथ आता है| उसमें ऐसा कहा गया है कि मौर्य युग में जब सम्राट सम्राट समृति संप्रत्ति राज्य कर रहे थे, वह समय ने उन्होंने दक्षिण में पर्टिकुलर राज्य गिना हैं वह है आंध्र प्रदेश| आंध्र प्रदेश द्रविड देश , जो आज का तमिलनाडु है और कर्नाटक है| इस प्रदेश में जैन धर्म के रीवाइवल के उन्होंने विशेष प्रयत्न किए| ऐसा 1-2 गाथा में आता है| प्रश्न यह उठता है कि लिटररी सोर्स को आरक्यों लॉजिकल के साथ कैसे कोलबरेट करेंगे| यह एक चैलेंज बन जाता है| ग्रंथ जो है वह पहले की घटना बता रहे हैं और हम उसको कैसे मैच करेंगे उस दृष्टि से शुरु करेंगे|

प्रथम हम बात करेंगे आंध्र प्रदेश के वडमानु तीर्थ की| आंध्र प्रदेश में कृष्णा नदी के तट पर स्थित छोटा गांव है वडमानू यह साउथ इंडियन जैन दृष्टि से बहुत ही इंपॉर्टेंट discovery है| इसके यह जो साइट है यह बेज़ी कली उत्खनन में निकाली गई थी| 1980 से 19 87 अलग-अलग सी फेस से| यह मोर्य देश की साइट है| यहां पर भगवान महावीर स्वामी का जीनालय था| आज 2200 साल के बाद भी गांव का नाम तेलुगु भाषा में वडमानु ही कहलाता है| केवी जी शास्त्री नाम क्या क्यों आय्क्योलॉजिस्ट जो थे उन्होंने उत्खनन किया

था| बेसिकली आर्कियोलॉजी गवर्नमेंट ऑफ इंडिया ने इसका उत्खनन न कर के एक प्राइवेट इंस्टीट्यूट हैदराबाद में जो बिरला की आर्क्योलोजिक के नाम से जाना जाता है, उन्होंने वहां पर इसके सब साइट को आइडेंटीफाइ किया| यह एक landmark डिस्कवरी रही है| मथुरा की स्तूप के बारे में थोड़ा-बहुत पढ़ा होगा| इस से मिलता जुलता एक स्तूप प्राप्त हुआ, अवशेष प्राप्त हुए| उसके फोर्थ स्टेज में अलग-अलग कंस्ट्रक्शन अवशेष मिले। आंध्र प्रदेश के कुंडोर जिले में यह आता है| जैन स्तूपों की बड़ी परंपरा रही है| उसके अंतर्गत यह दक्षिण से प्राप्त हुआ प्रथम स्तूप है, जैन परंपरा का यह प्रथम स्तूप है| यह मौर्य युग से है| इसमें अलग लेबल छोटे-छोटे इनस्क्रिप्शन मिले थे जिसकी लैंग्वेज प्राकृत और इसकी लिपि ब्राह्मी है| इसमें एक महत्त्वपूर्ण इनस्क्रिप्शन समप्रति विहार शब्द आया है मतलब जो संप्रत्ति राजाके द्वारा बनाया गया है| यह हम समझ सकते हैं इस प्रकार इसकी कुछ भी इमेजिस हमें यहां से उपलब्ध नहीं हुई है क्योंकि बहुत संत इंसियसेट है साइट है| जो बहुत प्रकार से हम बनाते थे| कोई बड़ा पत्थर यह जरूरी नहीं है| कास्ट की मिट्टी की लेप की लकड़े की मूर्तियां बनती थी तो उनके रिनेंस मिलना मुश्किल हो जाता है| कंपेयर टू स्टोन वगेरा के जप रीमेंस रहते हैं तो इस सदी में यहां पर बहुत सारी इनस्क्रिप्शन बीससे ज्यादा मिली है| इस एविडेंस को हम अगर रीलेट करें हमारे प्राचीन ग्रंथ बृहद कल्प भाष्य से तो उसमेंजो बात बताई जाती है कि संपत्ति में आंध्र प्रदेश के लिए विशेष प्रयास करके जैन धर्म के उद्धार के लिए काफी प्रयास किए थे| वह काफी हद तक हमें रिलेबल लगता है। इसे हमको यहभी मालूम पड़ता है जो हमारे प्राचीन टेक्स्ट है पेसिफिकली आगमीक जो आगम की जो कॉमेंट्री है उसका सिग्निफिकेंस कितना बड़ जाता है, उसने इतना सारा डाटा है कि उनको उनको अगर फेथ मानकर उत्खनन किया जाए खोज की जाए तो और हमें रीलेबल डाटा मिल सकता है । बुद्धिसजम के केस में ऐसा ही हुआ है| टैक्स्ट को देख कर कह एक्सक्वेशन किया गया था| इंडियन आरक्यों लॉजिकल की स्थापना हुई थी वन ऑफ द मेजर फॉर जिसके थू उन्होंने एक्सक्वेशन की वृद्धि की थी| टैक्स्ट इतने महत्वपूर्ण रहते हैं, भले ही वाचना के कारण उनमें शाब्दिक अंतर आ जाता है पर उसका जो ओरिजिनल कंटेंट रहता है उसमें बिल्कुल भी अंतर नहीं आता है क्योंकि भाषा जो है वह निरंतर प्रगतिशील है| प्राकृत के भी अनेक फोंट है। ज्यादातर रीजनल लैंग्वेज प्रकृत संस्कृत से आई हुई है । यह एक इंपॉर्टेंट पॉइंट हमें इसमें देखना है| यहां का जो वडमानूं स्तूप है,

इसका चार राज्यों तक समय चला है | मौर्य युग में जब इसकी स्थापना हुई, नहीं भी हो सकता है, आज हमारे पास प्रमाण नहीं है|

किंतु मौर्य युग से इसका अस्तित्व हमें पता चलता है, इसका प्रमाण मिलता है| उसके बाद खारवेल की डायनास्टेत्सी रुल करते थे| उनके ही रिलेटिव में यह थे| ओडिशा से और इससे जो बिलॉन्ग करते थे उनके ही रूट्स यहां पर थे और इन के समय में भी स्तूप के पास कंस्ट्रक्शन हुआ था| उनके बाद इक्ष्वाकु वंश आया यह ऋषभदेव के वंशज नहीं है| यह एक अलग ही वंश था| इसके बाद विष्णुकोलकी आता है| तो हम देखते हैं कि लगभग साडे 700-800 साल तक कंटिन्यूज एक्सक्वेशन मिलते है| इसके बाद कोई गतिविधियां हमको देखने में नहीं आई शिफ्टिंग माइग्रेशन के कारण उसके बाद पोस्ट सेंचुरी तो पूरी की पूरी ध्यान से ही मिट गई होगी| पर जैन धर्म की हिस्ट्री से देखिए तो डेक्कन की दृष्टि से देखिए तो यह बहुत ही महत्वपूर्ण बनता है| इसमें जिस तरह मथुरा के अनेक अनेक स्तूप मिले पिलर मिले स्तूप के यह स्तूप के रैलिंग्स वगैरह जो है, उनका जो कुछ भी मिला था वह जो मेटीरियल है वह अभी सारा का सारा हैदराबाद के जो इंस्टिट्यूट है वहां के म्यूजियम में यह बहुत ही सुंदर रूप से प्रदर्शनी में रखा हुआ है| जो जो कोलैबोरेशन होता है टेक्स्ट का और ऑक्यॉलॉजिकल एविडेंस का उसके द्वारा उनको मालूम पड़ता है| वडमानु वर्तमान विहार के लिए पांचवी छठी शताब्दी में भी स्थानीय लोगों के द्वारा दान किया गया था| यह रीसेंट पीरियड में हमको मिले हैं|

अब हम श्री पर्वत महातीर्थ की बात करेंगे| इसका उल्लेख जैन परंपरा के अलग-अलग संप्रदायों के अलग-अलग ग्रंथों में अलग-अलग संदर्भ से दिया गया है| प्रॉब्लम यह थी कि एक्चुअली यह कहां पर है इसका हमें प्रॉपर नॉलेज नहीं था| यह पर्वत तीर्थ जो आज का जो श्री शैलम पर्वत है, हिंदू परंपरा में जो 12 ज्योतिर्लिंगों की अवधारणा है उसके अंतर्गत आज वह स्थान माना जाता है| श्री शैलम मल्लिकार्जुन का 12 ज्योतिर्लिंगों का अंतर्गत यह है| आज के जो भी तीर्थों की चर्चा है वह मुख्यतः खंडहर के रूप में विद्यमान है या तो फिर इनस्क्रिप्शन में विद्यमान है| यह बहुत ही सुंदर पर्वत आंध्र प्रदेश में कानूर डिस्ट्रिक्ट में आया हुआ है| आज यहां पर कोई भी जैन मंदिर नहीं है| पूर्वकाल में भगवान मल्लिनाथ स्वामी का काफी प्रसिद्ध जिनालय हुआ करता था| इस जिसका उल्लेख स्वयं

आचार्य जीनप्रभ सुरेश्वर जी महाराजा ने विविध कल्प सूत्र में किया है| इसका मूल देखे तो हमारे यहां पॉम चरियम ग्रंथ ,है जैन परंपरा में जो रामचरित्र है| पहली से तीसरी शताब्दी में उसका निर्माण किया गया है ऐसा माना जाता है |पूर्वधर आचार्य विमल सूरी जी महाराज के द्वारा यह रचित है| इसमें श्री पर्वत का उल्लेख आया है और बताया गया है कि हनुमान जो बाद में सिद्ध हुए वह वह अपने पूर्व में श्री पर्वत से अपना साम्राज्य किया करते थे स्पेशली स्पेसिफिकली जो आंध्र के| इस ग्रंथ के बाद हमारे सामने महत्वपूर्ण ग्रंथ आता है त्रिषष्टीशलाका पुरुष ग्रंथ आचार्य हेमचन्द्रजी द्वारा रचित| उसमें बताया गया है कि उसमें इन्होंने इस पर्वत की सौंदर्य की चर्चा करते हुए बताया है कि यह पर्वत साक्षात मेरु के समान सौंदर्य मान है| इतना बहुत विशाल उन्होंने कंपैरिजन किया है उनसे पहले निर्मित चोपन पुरुष जैन चरित्र, जैन परंपरा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ आचार्य शिलांग सूरी जी द्वारा रचित| है उसमें भी उन्होंने श्री पर्वत की चर्चा की है, और सागर चक्रवर्ती के समय में यह तीर्थ विद्यमान था| यहां मुनियों का विहार मुनियों की तपस्या आदि के साथ जैन लिटरेचर में यह सिद्ध क्षेत्र के रूप में रिकॉग्नाइज है| उसके पुरवा सातवीं आठवीं शताब्दी में जैन परंपरा में संस्कृत वांग्मय के रूप में हमें पहला ग्रंथ परिचित है तत्वार्थ सूत्र, वह सूत्रात्मक ग्रंथ है |

उसके बाद वारंग चरित्र नाम का ग्रंथ है जो जैन परंपरा का संस्कृत साहित्य का प्रथम महाकाव्य है |इसमें भगवान नेमिनाथ के समय में हुए वर्धक गणधर के समय में एक वारंग राजकुमार हुए थे उनका चरित्र पूरा इस ग्रंथ में दिया हुआ है| इसके करता आचार्य श्री जटाशिवान्दी मुनि जी है, जो स्वयं आंध्र के कर्नाटक के प्रदेश में विचरण किया करते थे| उन्होंने भी बताया है कि श्री पर्वत श्री मुनि नाम के मुनि भगवंत ने एक हजार वर्ष की लंबी दिर्घ तपस्या कर के सिद्ध गति को प्राप्त किया था| ऐसा उन्होंने बताया है| यह प्राकृत संस्कृत लिटरेचर की बात हो गई | कर्नाटक का भी जो लिटरेचर है इसमें दो ग्रंथ है एक है न्यसेन कृत धरमामृत और कविवर ब्रह्म शिव के द्वारा रचित समय परीक्षा इसमें जैन धर्म के उत्थान और पतन दोनों की चर्चा है| यह ग्रन्थ कन्नडा में १२वी शताब्दीमे रचा गया था| न्यसेन जी ने इस सिद्ध क्षेत्रों से रिलेटेड अनेक कथानक दिए हैं कि किस तरह से एक राजा ने दीक्षित होकर लंबे समय तक आराधना की थी| बेसिकली उत्तर भारत

से दक्षिण भारत तक निर्मित जो लिटरेचर है इसमें इस पूरे तीर्थ जी चर्चा सिद्धक्सेत्र मुनियों के विहार की त्याग की व्याख्यान आदि प्रवृत्तियों से जुड़ी हुई बातों से है और केवल ज्ञान की भूमि से इसे जोड़ा है| इस प्रकार की एक चर्चा चलती है| 16 वी शताब्दी का एक इन्स्क्रिप्शन यहां के एक टेंपल में मिलता है| उसमें एक प्रमुख के द्वारा श्वेताम्बर जैनों एक नरसंहार की चर्चा इसमें आती है| इस तीर्थ से जुड़ी हुई जो प्रथम शताब्दी की 16 वीं शताब्दी में यह अंतिम लेख के साथ नाही साहित्य में नाही पुरातत्व में इसका की जड़ मिलती है चर्चाएं मिलती है| इस तरह से हम देखते हैं कि आंध्र प्रदेश में पर्वतीय क्षेत्र में अनेक जैन तीर्थ का एग्जिस्टंट था|

अब हम चर्चा करते हैं रामतीर्थ की| रामगिरी और राम कुंडा के नाम से जाना जाता है| यह विजयनगर गांव के डिस्ट्रिक्ट में आता है| यहां पर भी फिलहाल कोई मंदिर नहीं है पर पूरे परिसर में अनेक अनेक जैन धर्म से रिलेटेड अवशेष बिखरे हुए हैं| एक जगह पर स्तूप के भी अवशेष हैं| पर एकज़ेक्ल्तली हम बता नहीं सकते कि यह जैन स्तूप है या बौद्ध। यहां पर अनेक सारी गुफाएं भी है| यहां तीर्थंकर परमात्मा की स्क्रिप्ट शिल्प कल्चर है जो दीवाल पर बनाए जाते हैं वह है | उसमें उड़ीसा आर्ट दिखता है। कुछ सिलिएट पिक्चर है वह आंध्र प्रदेश कर्नाटक और लडेखन से जो उत्तर भारत के शिल्प से नहीं मिलेंगे| तीर्थंकर श्री परमात्मा के शिल्पों में आपने देखा होगा श्रीवत्स बनाया जाता है वह दक्षिण भारत में 99% नहीं दिखेगा, उसी तरह पद्मासन पूरे भारत में प्रचलित है दक्षिण भारत में अर्ध पद्मासन प्रचलित है और 99 परसेंट अर्ध पद्मासन में है या तो कायोत्सर्गा में है| तीसरी चीज है लाछनों का अभाव| पुरे भारत में इसकी प्रथा है जबकि दक्षिण भारत में लांछन की परंपरा नहीं है| लेटर पैड है, पोस्टर है १४ सेंचुरी के जो है वहां के राजाओं से ज्यादा कनेक्शन जो स्थापित हुआ है उसके द्वारा यह लांछन की लांछन की परंपरा दक्षिण भारत में प्रवेश पा गई है बाकी 12वीं शताब्दी तक के लांछन का शिल्प में प्रभाव दिखेगा | यह तीन चीजें दक्षिण भारत की प्रतिमाओं में हमें मिलती है जो उसे एक सबसे एकदम अलग बना देती है यूनिक बना देती है | इस तीर्थ से जुड़े हुए एक जैन आचार्य की कथा है| इन परंपरा में समय-समय पर आचार्य ने अपनी लेखनी चलाई है| तो उसमें आयुर्वेद भी एक विषय रहा है| हमारे प्राचीन समय में जोनी पाहू नाम का ग्रंथ हुआ करता था| आज

अवशेष के रूप में यहां पर चैप्टर के रूप में भंडारकर इंस्टीट्यूट में वह गढ़यांतर है और रिसेंटली वह प्रकाशित भी हुआ है| वह आयुर्वेद और अनेक मंत्र तंत्र के द्वारा चिकित्सा अनेक विद्याओं आदि की चर्चा इस ग्रंथ में है| यह पूर्ण रूप से अभी नहीं मिलता है| कहने का तात्पर्य यह था कि जैन वांगमाय में काफी विशाल था आज हमारा दुर्भाग्य है कि आंध्र प्रदेश का एक भी जैन ज्ञानवर्धक ज्ञान भंडार आज नहीं बचा है |

श्री पर्वत पर ज्ञान भंडार हुआ करता था, कुलपाकजी में हुआ करता था| आप पर यहां पर उग्रादित्य नाम के जैन आचार्य हुए सातवीं आठवीं शताब्दी में के मध्य भाग में कल्याणकारकम कार्यक्रम नाम का संस्कृत भाषा में एक आयुर्वेदिक ग्रंथ की रचना उन्होंने की| उस समय में बेसिकअली चालुक्य वंश तेगी चालुक्य का शासन था तो उन्होंने और राष्ट्रकूटओ का भी शासन अनेक था| उस समय में उस समय उन्होंने अपने गुरु नंदीसेनसूरी से विद्या की प्राप्ति करके श्रीराम पर्वत पर इस ग्रंथ का निर्माण भक्तजनों के उद्धार के लिए किया था| हम यह सोचते हैं कि हमारे पास अध्यात्म के कर्मकांड के क्रिया के ही ग्रंथ है, हमारे यहां नय व्यवहार है निश्चय है दुनिया भर की चर्चा हम साथ में कर लेते हैं उसके साथ अनेक विषयों पर जैन आचार्य ने जो उपयोगी समझा और आत्म साधना में उपयोगी माना और ऐसे ग्रंथों का निर्माण किया| उसमें कल्याणकारकम ग्रंथ सोलापुर से प्रकाशित हुआ है इसकी प्रति हमें प्राप्त होती है| यह विशालकाय ग्रंथ है| इस ग्रंथ का निर्माण कार्य उग्रादित्य जी ने उस समय में विष्णुवर्धन नाम के तेंगी चालुक्य के दसवीं सम्राट थे| इस 700 800 के आसपास उनका राज्य काल था| उस समय में उन्होंने इन गुरुओं की वंदना यहां पर की थी ऐसा इस इन्स्क्रिपशन भी प्रकाश में आया है| इस के अलावा भी हमें छोटे-मोटे बहुत से एविडेंस मिले हैं| यह फ्रिक्वेंटली विजिटेड जैन तीर्थ था| पर्वतीय क्षेत्र था| पूरे का पूरा सौंदर्य से परिपूर्ण यहां पर 11वीं शताब्दी में एक गुफा में एक समय के अनुसार त्रिकाल सिद्धांत देव ने रामतीर्थ की वंदना की थी ऐसा हमको उल्लेख मिलता है| उस समय में राष्ट्रकूटओके एक राजा उनके दरबार में उग्रादित्य आचार्य ने शाकाहार के बारे में राज्यसभा में लोगों को प्रतिबोध दिया था| ऐसा उल्लेख कई ग्रंथों में आता है| कहीं तीर्थ ऐसे हैं जिनको जानने के लिए हमारे पास लिटरेरी सोर्स नहीं है क्योंकि दक्षिण भारत में ग्रंथों का अभाव है| 10th सेंचुरी की काफी कम है और जो है भी लगभग

नष्ट हो है और जो है वह विषयों को लेकर चलते हैं, जैसे आयुर्वेद तो उसने आयुर्वेद की प्रधानता है कोई आत्म तत्व के ऊपर है तो उस पर उसक लेकर चल रहे हैं कोई आगम का विषय है तो उसको लेकर चल रहे हैं| यह चर्चा बहुत कम मिलती है हम संपूर्ण वांग्मय को लेकर चलते हैं post of century मे भी दूसरे विषयों की चर्चा ज्यादातर हिस्ट्री उपयोगी जो है उसकी चर्चा ज्यादा आती थी इसमें चढ़ाव उतर आते रहते हैं | रामतीर्थ की ख्याति एक हिंदू तीर्थ के रूप में है| यह आर्कियोलॉजी साईट है|

बहुत प्रसिद्ध तीर्थ पार्श्वमणि तीर्थ आंध्रप्रदेश प्रदेश के आरवनी जिले में आता है| यहां पर पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा है, जो 12 वीं शताब्दी में कल्याण के चालुक्य जो कर्नाटक के एक श्रावक थे |उन्होंने इसका निर्माण किया था हमको उल्लेख मिलता है |जो मूलनायक प्रतिमा है उसके नीचे भी कन्नड़ भाषा में लिपि में 12 वीं शताब्दी में वर्णन है जो इसने यहां की तिथि निर्माण की थोड़ी बहुत जानकारी हमें देता है| कोई सबूत हमारे हाथ में नहीं आए हैं अन्य जो सबूत है उसे हमें यह पता चलता है कि राष्ट्रकूट उसके बाद उसके बाद कल्याण के चालुक्य दक्षिण कर्नाटक मैं तुनगो वंश का राज्य था| उसके बाद वॉइससुकड़ राज्य आया उसके बाद विजय नगर साम्राज्य आया| क्योंकि हम जब हिस्ट्री देखते हैं तब यह हमें बैचमेट्स बनते हैं| दयानास्ती में इतने सारे परिवर्तन आते हैं लैंग्वेज लिटरेचर के साथ स्थापत्य आदि में भी बदलाव आता है| उसके द्वारा जो स्थापत्य है शिल्प है प्रतिमा है शिल्प कला के विविध आयाम हैइन को समझना अरेंज करना है| हमारे लिए थोड़ा बन जाता है| राष्ट्रकूट को गिराकर कल्याण चालूक्य और महाराष्ट्र का पाट तेलंगाना का पाट आंध्र प्रदेश और कर्नाटक का पाट यह राज्य था| आज भी हम देखेंगे नॉर्थ कर्नाटका से जुड़ा हुआ जो पार्ट है आंध्र प्रदेश तेलंगाना में जो मेजर inscription हैं वह वहां की भाषा में ना होकर कनाडा की भाषा में है| लिपि एवं भाषा दोनों कनाडा है |10% संस्कृत में मिलेगा ९० रीप्रेशन इन राजाओं के कनाडा भाषा में मिलेंगे आज हिन्दी का स्थान है उस समय वह दक्षिण में कनाडा का था| उनके लिखें डेक्कन के लिटरेचर को हम यदि देखें तमिलनाडु के साथ तो मेजॉरिटी जो लिटरेचर है कनाडा में ही मिलता है| तेलुगु में मिलता है लेटर पैड का।

उस समय की राजनीति का धर्म पर क्या प्रभाव पड़ा समाज के ऊपर क्या धर्म समाज और राजनीति परिस्थिति के नीचे आम आदमी की क्या स्थिति थी| एक माध्यम हैसमय एक विषय को समझने के लिए, बाकी सभी दृष्टिकोण से देखना अवश्य इसे हमें नॉलेज ना कहीं मिल जाता है|
यहां पर कल्याण चालूक्यों का टेंपल है तो वह रामा टेंपल के नाम से जाना जाता है| उसके शिखर के नीचे का जो भाग है वह पर भी एक तीर्थंकर शिल्प पद्मासन मुद्रा में बना हुआ है| वह हमें जैन की और इंडिकेटर करता है वह हिंदू के रूप में पूजा जाता है यहां प्रतिमा का इतिहास की बहुत रोचक है | 20-25 साल पहले लोगों को इस प्रतिमा के बारे में पता पड़ा| पूजनीय भक्ति भाव से यहां 800 साल पुरानी प्रतिमा अखंड रुप में समाज को मिलना बड़े सौभाग्य की बात है|

उसके बाद जैन परंपरा की साध्वीसुलक्षाना जी जो जैन धर्म के खतर गच्छा परंपरा से रिलेटेड है| उन्होंने बहुत प्रयास करके यहां पर नव्य नागरी शैली में मारो गुर्जर में यहां पर जीनालय निर्माण करके मूल नायक प्राचीन प्रतिमा का सरक्षण किया| पूरे भारत से लोग यहां तीर्थ के लिए आते हैं| यहां पर पद्मावती देवी की भी प्रतिमा है| यहां पर अन्य जो अवशेष मिले वहा मद्रास के नियम में म्यूजियम मैं स्थापित यह गए हैं| यह आडोली से 10 किलोमीटर दूर यहां से 10 किलोमीटर दूर एक और तीर्थ है जो पेलूकोंडा तीर्थ के रूप में जाना जाता है| आज एक खंडर के रूप में यहां विद्यमान है | राष्ट्रकूट कालीन प्रतिमा से हमें यहां समझना है कि नवी से दसवीं शताब्दी के बीच में निर्मित यह प्रतिमा है| यहां मंदिर खंडहर अवस्था में हैं| एक कायोत्सर्ग मुद्रा में और अल्पपद्मासन मुद्रा में शिल्प आज भी विद्यमान है| एक तरह ट्विनसिटी हुआ करती थी प्राचीन समय में| जैन धर्म को देख सकते हैं| यहां पर खंडित अवस्था में तीर्थंकर प्रतिमा आज भी है जो अपनी उद्धार की मांग में प्रतीक्षा में है| तो पेतातुमलूम के बाद चीतातुमलूम की बात की।

ऋषभ पर्वत तीर्थ यह आंध्र प्रदेश के करीमनगर जिले में हे भूतकाल में यह सिद्ध क्षेत्र के के रूप में इसकी ख्याति थी| पर्वत पर रिलीस कल्चर बना है| यह शताब्दी के नवमी शताब्दी के पूर्व का अस्तित्व मिलता है| चालूकयस से देमुलबाड़ा रीइंजन है| इसको देमूलवाड़ा कहा जाता था। चालूक्य वंश के अलग-अलग ब्रंचिस निकले जो गुजरात तक फैले| उन्होंने

अपनी अलग अलग सत्ता का निर्माण किया| यह पीरियड बहुतसमृद्ध था चालूक्य के समय में पूरा एरिया जैन धर्म के अवशेष से बिखरा हुआ है| इसको सिद्ध क्षेत्र के रूप में बताया गया है| यहां पर एक बहुत ही यूनिक इंस्नक्रिप्शन है वहां कवि बंब जिनकी आदि कवि के रूप में ख्याति है| राजा अरी केसरी के शासन में हुए थे| उनके छोटे भाई जीन वल्लभ उन्होंने इस तीर्थ पर अनेक प्रतिमा निर्माण किया और त्रि भाषीय इन्स्क्रिप्शन लिखा जो कन्नड़ लिपि में है| यह इतना इंटरेस्टिंग है कि शायद आपने आप में यह एक यूनिक इनस्क्रिप्शन है| जो पूरे दक्षिण भारत में जो लैंग्वेज को इस्तेमाल करता है| आज भाषा को देखकर उसका विभाजन किया जाता है | राजकीय पॉलिटिकल फायदा उठाने की कोशिश की जाती है बाटने की कोशिश हो जाती है| ऐसे स्थिति में हमें हमारे प्राचीन आदर्शों की औरगौर करना चाहिए जहां पर संस्कृत भाषा कन्नड़ भाषा और तेलुगु भाषा 3 भाषा में इन्स्क्रिप्शन लिखा हुआ है| 950 980 के लगभग समय में यहां लिखा गया था इसने प्रतिमा का निर्माण चैत्य का नाम त्रिभुवनतिलक जिन वल्लभ ने किया था| जिसमें अलग-अलग टाइप का डाटा है| पहले के जमाने में अगर किसी राजा कवि किसी को किसी लीटररिवर को कुछ दिया है, गिफ्ट दिया है तो किस कंडीशन में कि वह इसमें पता चलता है| यहां पर बता गया गया है कि यह जो यह जो एरिया था अरी केसरी राजा ने महाकवि बंब उन्होंने विक्रमारजूनियम महाकाव्य का निर्माण किया रचना की| इसमें महाभारत का काल का चैप्टर लिया है मैं हीरो उसने अर्जुन है | कन्नड़ भाषा में इसकी रचना की है और परमात्मा ऋषभ देव का चरित्र उन्होंने कन्नड़ भाषा में लिखा जो आदि पुराण के रूप मे प्रसिद्ध हुआ| उसमें आज कुलदेवी देवता की एक परंपरा की चर्चा इसमें आ जाती है| आज कुलदेवी की प्रचलन पूरे भारत में है| जैन परंपरा में भी अनेक देव देवियों को माना जाता है| यहां कन्नड़ का एक परिवार प्रथम तीर्थंकर रुषभदेव और अंतिम भगवान महावीर को कुल देवता के रूप में मानते हैं| इन्होंने यह बात इन्स्क्रिप्शन में बताई है| मतलब पहले और अंतिम तीर्थंकर यहां हमारे कुलदेव रूप में हैं इनकी प्रतिमा का निर्माण हमने यहां किया है |उसकी जानकारी यहां पर भी हुई है| इस क्षेत्र में बहुत सारी जगह के नाम उनके खुल देवता के नाम में प्रचलित है| हम सोचते हैं कि तीर्थंकर कुलदेवके रूप में स्थापित कर सकते हैं किंतु हमारे यहां हजारों साल पहले यह सिनेरियो मौजूद था| एक स्वस्थ परंपरा रही थी| इसमें अनेक जॉ उनको प्रापत उपाधीया की उसमें एक उपाधि थी वाच

काभरन नाम की उपाधि उनको मिली थी| एक दृष्टि से देखा जाए तो यह पुरातत्व पुराण काली तेलुगु कंपोजीशन है| काव्य को विश्वरुप में तेलुगु की प्रथम कवि के रूप में भी आज ननैया भट्ट जिन्होंने तेलुगु महाभारत लिखा| उनकी मानयता है कि ग्यारवी शताब्दी के आसपास लिखा होगा| उसके सो डेढसो साल पहले ही जीन वल्लभ ने यहां की तेलुगु भाषा में उसकी इन्स्क्रिप्शन लिखा था और कुछ उनको वाचकाभरन की उपाधि प्राप्त हुई| तो अभी यहां भी इतिहासकारों को गौर करना चाहिए एक अलग दृष्टि से विचार करना चाहिए| इसके साथ ही तेलुगु का एक ग्रंथ है जो इसी समय में निर्मित है| ग्रंथ के करता नहीं करता ने उसमें लिखा है वाचका भरण की सहायता से उन्होंने अपने ग्रंथ का निर्माण किया है| वाचकाभरण कौन है यह लास्ट फिफ्टी यरस में ही प्रकाश में आया है |जिसकी जानकारी अंग्रेजो के समय में इसकी की जानकारी नहीं थी | ननैया भट्ट की ख्याति बड गई एक प्रथम तेलुगु कवि के रूप में| अभी नव्य द्रष्टिमें उसके ऊपर विचार करना जरूरी है| उन कविने लिखा की उन्होंने वाचकाभरण की सहायता ली है| यह बात हमें तब पता चली के कवि जिन वल्लभ थे| इसमें अनेक सांस्कृतिक सौंदर्य की चर्चा भी है| उनके वंश की चर्चा भी आई है |उनके पिताजी पहले ब्राह्मण धर्म का पालन करते थे बाद में उन्होंने जैन धर्म को स्वीकार किया ऐसा वह लिखते हैं अपने गुरु का नाम और परंपरा का नाम साथ-साथ एक छोटे भाई का अपने बड़े भाई के लिए जो प्रेम है वह और तीसरी चौथी पंक्ति में उभर कर आता है |अपने कार्यों के द्वारा अपनी पहचान बनाई बनाए| आज तक हिस्ट्री में प्रकाशित न था| जैन साहित्य की प्रसिद्धि ही इतनी कम है तब उसके अंदर का कंटेंट आम जनता को कैसे पता पड़ेगा| उन्होंने अपनी पहचान मैं बंब का लघु भ्राता हूं मेरे भाई ऐसे थे मेरे भाई वैसे थे| उनका काव्य कौशल्य ऐसा था, मेरे भाई को केसरी ने यह जगह दान दी थी| ऐसी बात आती थी| तो आज हम देखते हैं भाई भाई के बीच में कलेश होते हैं यहां पर अपने भाई के प्रति इतना प्रेम हमें दिखता है| यह एक आदर्श है| आदर्श ग्रहण करना चाहिए| अरि केसरी राजा ने जो बम को जो यह पूरा एरिया दान में दिया तो विक्रमार्जुनविजय ग्रंथ की रचना की| उसके संबंध में तो उन्होंने शर्त रखी जो लिखी गई है और आपके वंशज के उपभोग के मात्र है| आप यहां किसी और को ट्रांसफर नहीं कर सकते| बेचने दे नहीं सकते | हमें उस समय के डोनेशन की पैटर्न दिखती है| किस प्रकार क्या-क्या एक फीचर है कि नॉन ट्रांसफर डोनेशन दिए जाते थे | वृषभ पर्वत की बात है तो

चक्रेश्वरी देवी का एक शिलप बना है अष्टभुजा वाली चक्रेश्वरी देवी| भगवान महावीर स्वामी का भी उपर शिल्प बना हुआ है और ऋषभदेव का बना हुआ है| १४-१५ पन्क्तिओमे 3 भाषाओं में इसका वर्णन है| यह करमनगर जिलेमे है| तीर्थ एबंडेंट प्लेस में है यहां पर कोई जाता नहीं है| कोई बड़ी प्रॉब्लम नहीं है यहां जाने में और एक साउथ इंडिया से एक यूनिक चीज हम यहां देखते हैं|

****

JAIN SAHITYA ACADEMY TRUST